रजिया का कमाल

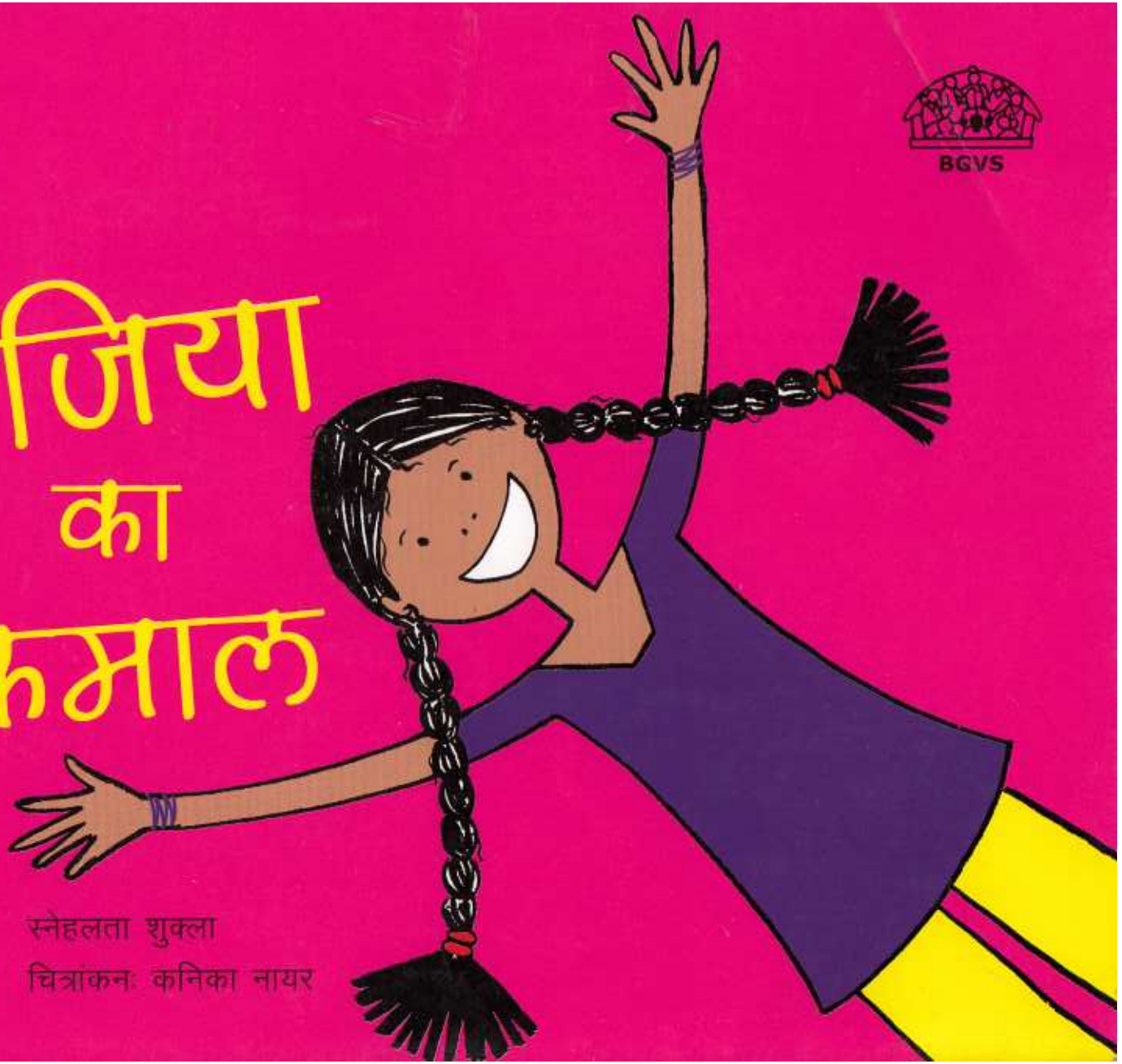

स्नेहलता शुक्ला
चित्रांकनः कनिका नायर

BGVS

इस पुस्तक का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन–पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।

रजिया का कमाल **Rajia Ka Kamal**

कथा **Story**
स्नेहलता शुक्ला Snehlata Shukla

चित्रांकन **Illustration**
कनिका नायर Kanika Nair

पुस्तकमाला संपादक **Series Editor**
मनोज कुलकर्णी Manoj Kulkarni

प्रथम संस्करण **First Edition**
जनवरी, 2012 January, 2012

सहयोग राशि **Contributory Price**
50 रुपये Rs. 50

मुद्रण **Printing**
सन शाइन ऑफसेट Sun Shine Offset
नई दिल्ली – 110 018 New Delhi - 110 018

ISBN:- 978-93-81811-02-3
© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन
Publication and Distribution:
Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvsdelhi@gmail.com. Website : www.bgvs.org

रजिया का कमाल

स्नेहलता शुक्ला
चित्रांकनः कनिका नायर

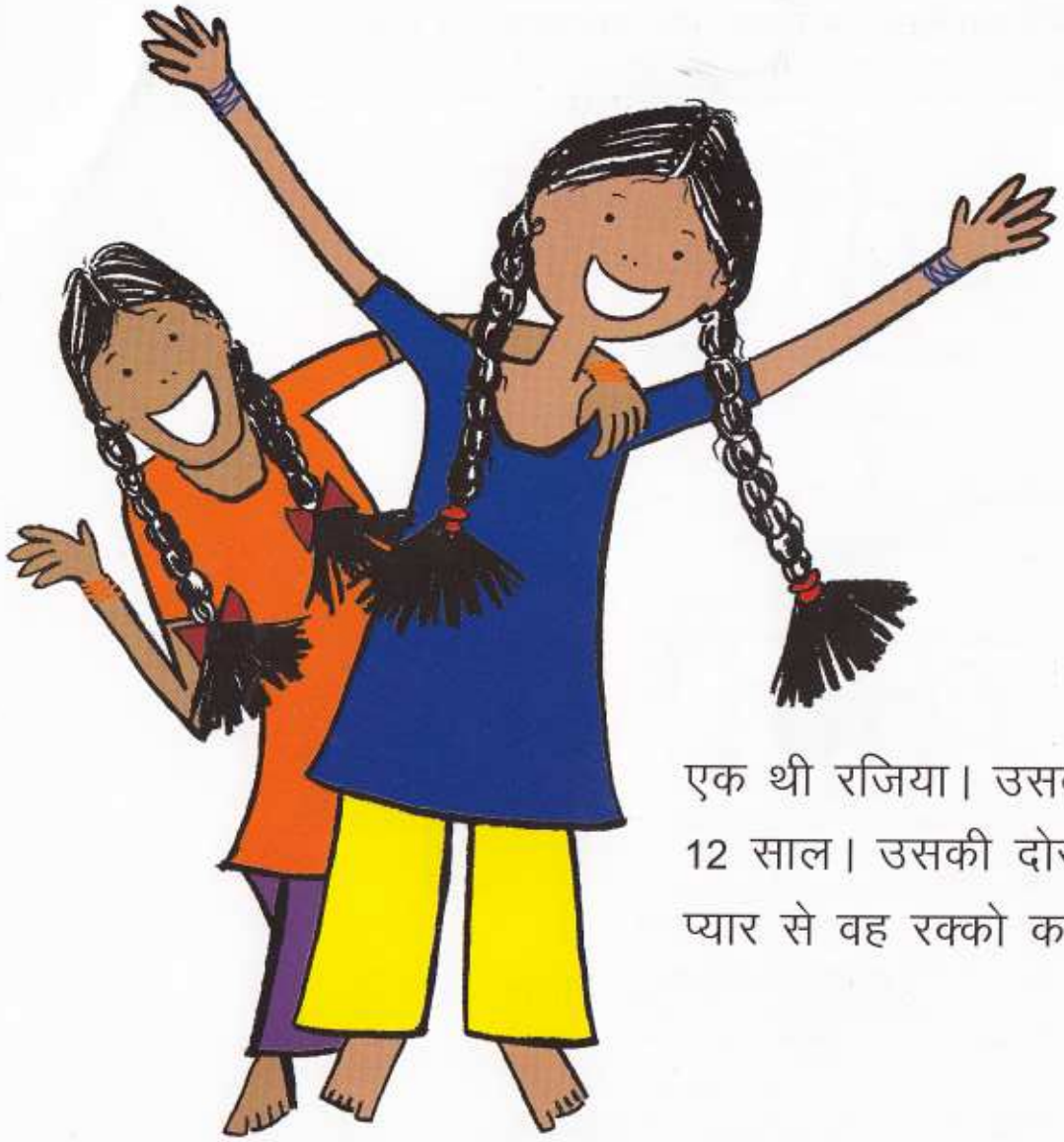

एक थी रजिया। उसकी उम्र होगी कोई 12 साल। उसकी दोस्त थी, राकिबा। जिसे प्यार से वह रक्को कहकर बुलाती।

कुछ दिनों से रजिया कुछ उदास और परेशान थी। न ठीक से खाती–पीती न ही खेलती। रक्को के बहुत पूछने पर उसने उदासी का कारण बताया।

रजिया की मां को पानी भरने हैण्डपम्प पर जाना पड़ता था। जो रजिया के घर से बहुत दूर था। मां को पानी भरने के लिए घंटों लाइन में लगना पड़ता था। मां बहुत थक जाती थी। उन्हें रजिया से बात करने की भी फुर्सत न थी। रजिया देखती कि घर में अब्बा उस वक्त अपने दोस्तों से गप्पे करते रहते थे।

रजिया से अपनी मां का कष्ट देखा नहीं जाता। खुद छोटी होने के कारण मां की मदद भी नहीं कर पाती। रजिया की बात सुनकर रक्को भी सोच में पड़ गई। यही हाल तो उसकी अम्मी का भी था।

रक्कों ने रजिया को सुझाया, क्यों न घर में पानी का इंतजाम कर दिया जाए। मां को दूर भी न जाना होगा और वह थकेगी भी नहीं। रजिया को बात भा गई। उसने उसी वक्त एक कुआं खोदने का इरादा कर डाला।

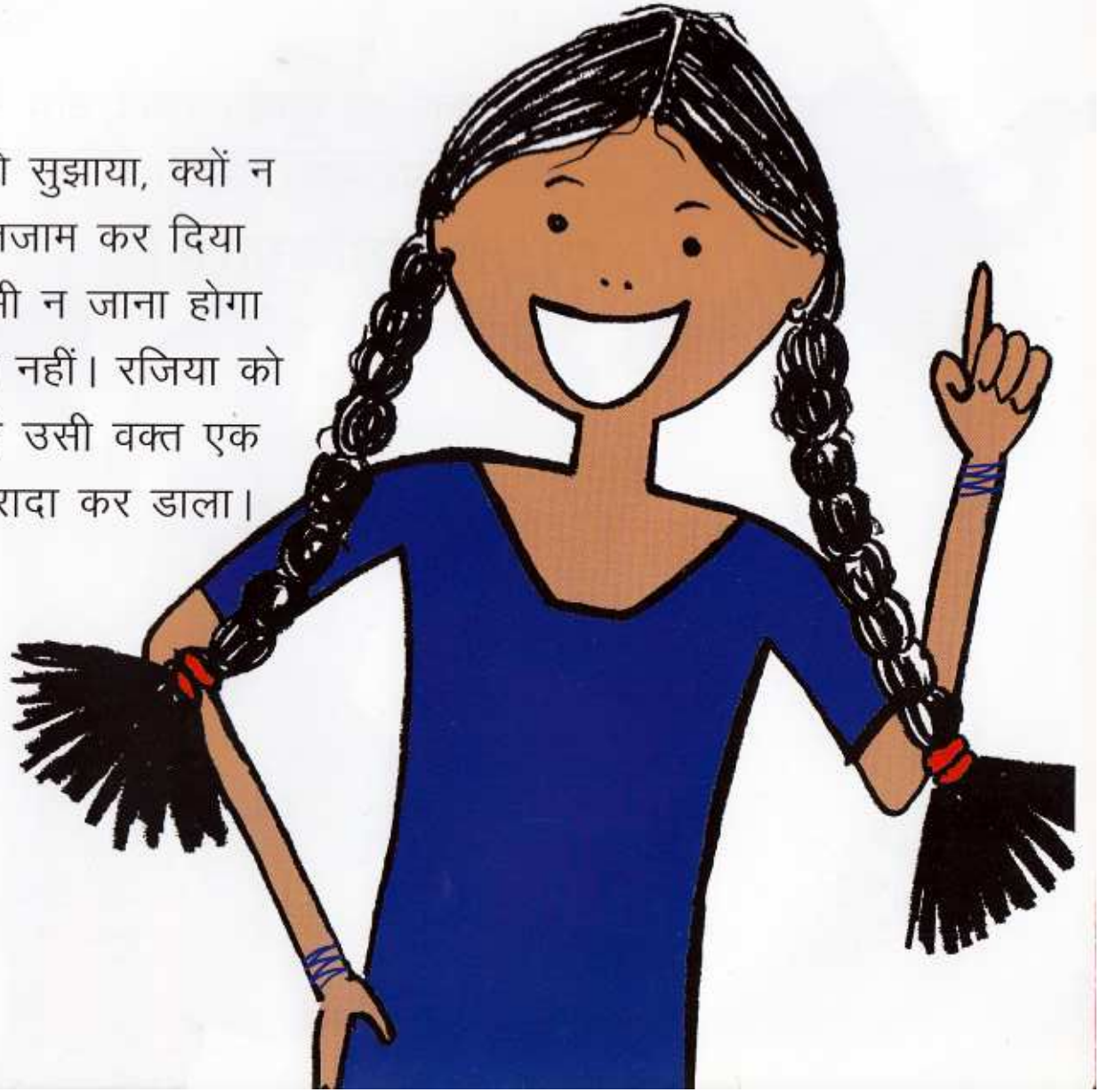

कुआं खोदने की बात उसने रक्को को बताई। रक्को सोच में पड़ गई।
रक्को बोली–निर्णय तो अच्छा है पर कुआं खोदेगा कौन?

हम तो लड़कियां हैं।

यह काम तो आदमियों का है।

रक्को बोली– पर अब्बा तो कभी
इस ओर ध्यान ही नहीं देते।

रजिया ने घर के पीछे पड़ी जमीन में कुआं खोदना शुरू किया। काम मुश्किल था, मगर रजिया ने हिम्मत न हारी।

रजिया के अब्बा को कुआं खोदने की बात मालूम हुई। वे बोले कि यह काम बहुत मुश्किल है। अब्बा ने यह भी कहा कि मेहनत का काम तो सिर्फ लड़के कर पाते हैं। रजिया कैसे कुआं खोद पाएगी ?

अब्बा ही क्या, जो भी रजिया के कुआं खोदने की बात सुनता, हंसने लगता। सभी ने इसे रजिया का बचपना समझा। लेकिन रजिया तो पक्के इरादे वाली लड़की थी।

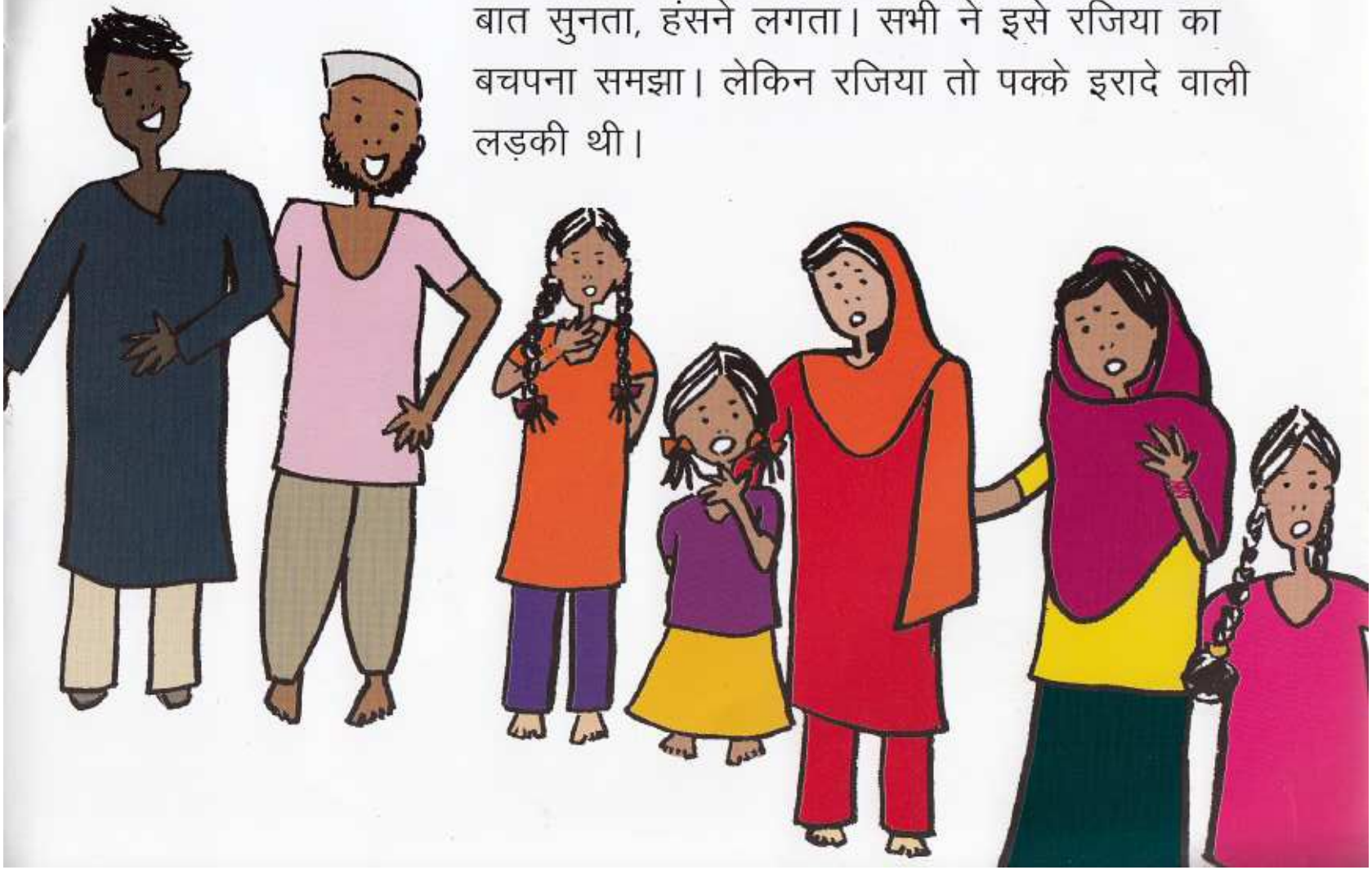

वह रोज कुएं के लिए एक–डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोदती। दिन में सात–आठ घंटे वह इस काम में लगी रहती। कई बार तो रात को उठकर भी खुदाई में लग जाती। धीरे–धीरे गड्ढा गहरा होता गया। उसमें उतरने के लिए अब रस्सी का सहारा लेना पड़ता।

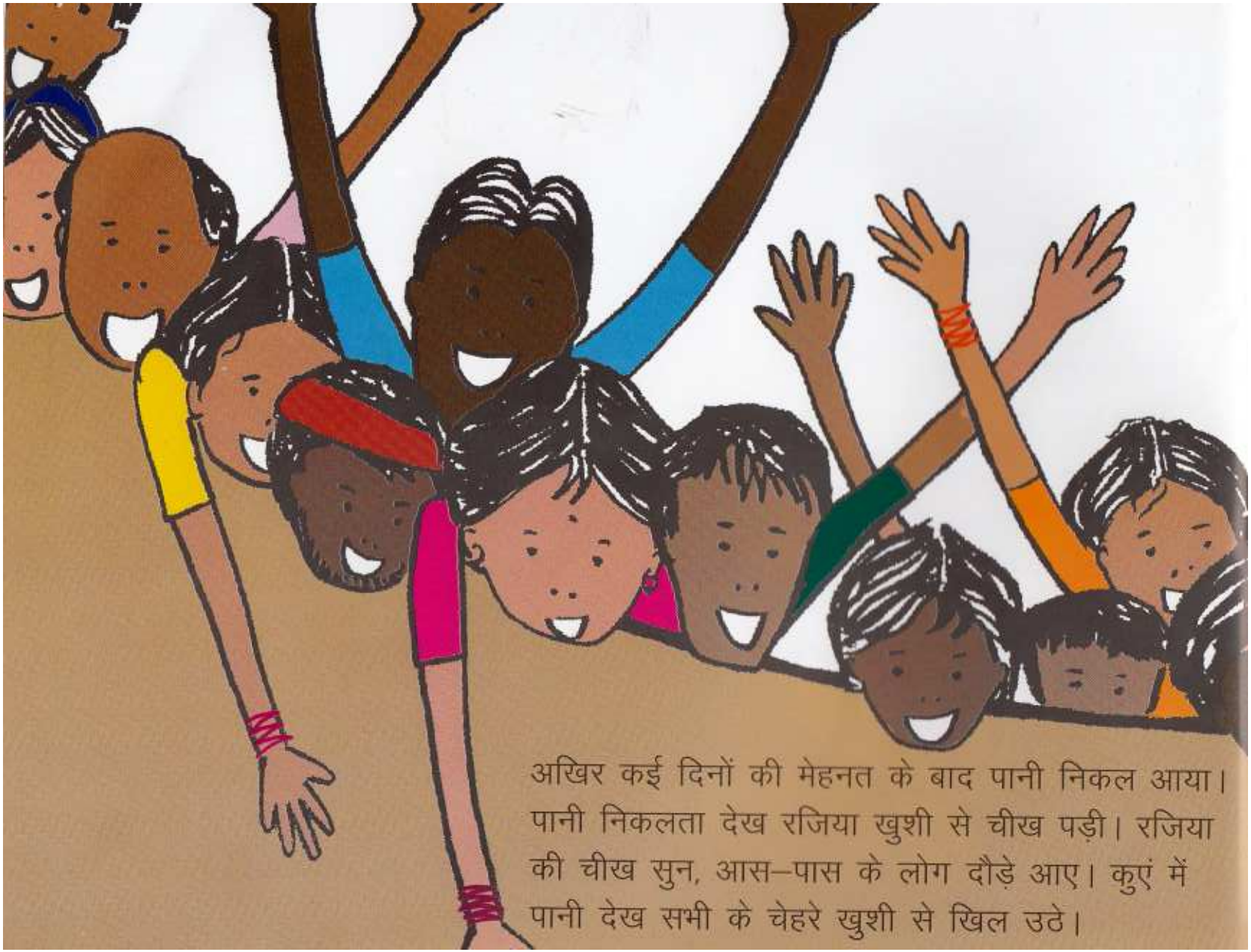

अखिर कई दिनों की मेहनत के बाद पानी निकल आया। पानी निकलता देख रजिया खुशी से चीख पड़ी। रजिया की चीख सुन, आस–पास के लोग दौड़े आए। कुएं में पानी देख सभी के चेहरे खुशी से खिल उठे।

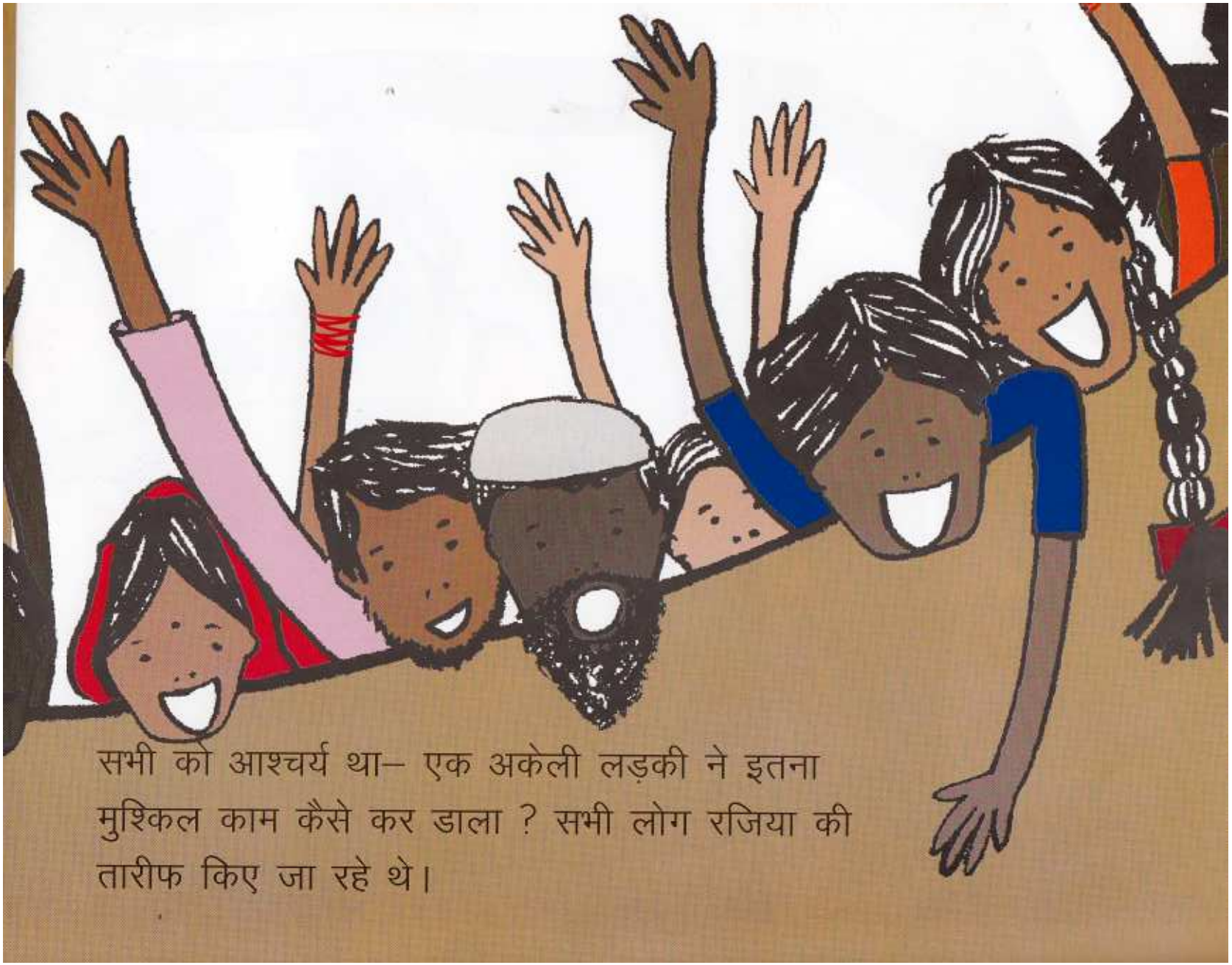

सभी को आश्चर्य था– एक अकेली लड़की ने इतना मुश्किल काम कैसे कर डाला ? सभी लोग रजिया की तारीफ किए जा रहे थे।

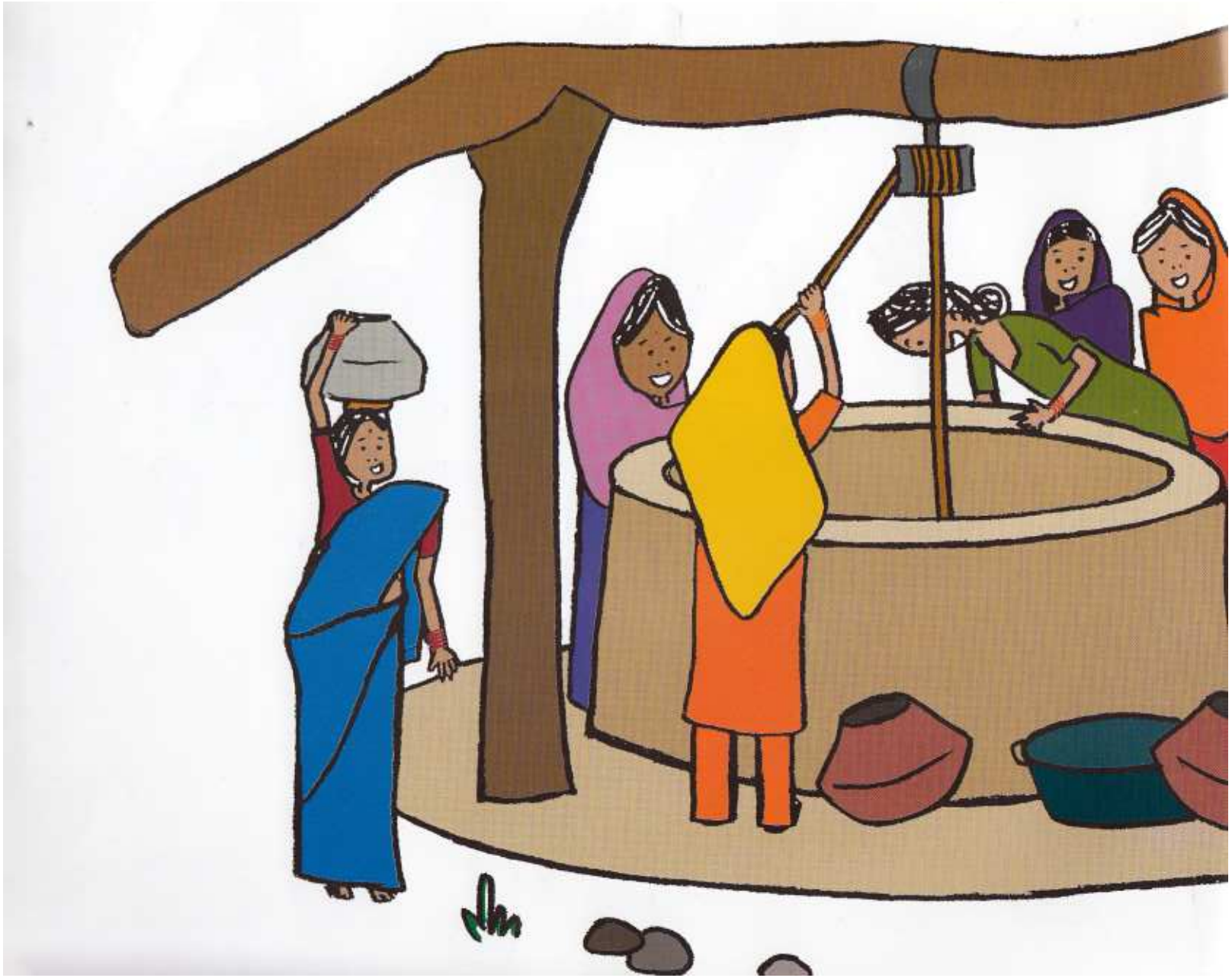

कुआं खुद जाने से अब मां को पानी भरने दूर नहीं जाना पड़ता। गांव वालों को भी रजिया के कुएं से पानी मिलने लगा।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

BGVS

समाज के विकास में जन विज्ञान आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में गरीबी, गैर–बराबरी, अन्याय और अज्ञान को खत्म करने और सहयोग, समानता और न्याय के आधार पर एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में यह आंदोलन लगातार काम कर रहा है। देश में फैली असाक्षरता को दूर करने के लिए इस आंदोलन ने वर्ष 1989 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की स्थापना की। जिसका मुख्य काम जनता को अपनी बदहाली के कारणों को जानने के लिए प्रेरित करना है। जनता की सोच को तार्किक और विज्ञान सम्मत बनाने के लिए विज्ञान का प्रसार करना है। आज भारत ज्ञान विज्ञान समिति की सांगठनिक उपस्थिति देश में 22 प्रदेशों के 400 जिलों और 10,000 से अधिक पंचायतों में है। जहां वो साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण, पंचायती राज और स्वास्थ्य जैसे विविध सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत है।

कला जत्थों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों, प्रदर्शनियों और अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक तरीकों से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भ्रांत धारणाओं को समाप्त करने के लिए संगठन लगातार काम कर रहा है। बच्चों के लिए 'मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा कानून' को लाने एवं लागू करने में भी संगठन का महत्पूर्ण योगदान है।जनवाचन अभियान इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसके तहत अब तक 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। जिनमें नवसाक्षरों, नवपाठकों के साथ ही बच्चों के लिए श्रेष्ठ और तार्किक साहित्य का प्रकाशन शामिल है। देशी–विदेशी महान लेखकों की प्रसिद्ध रचनाओं के अलावा विभिन्न भाषा के भारतीय लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित की गई है। जिन्हें कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक पाठकों को उपलब्ध करवाना इस संगठन का उद्देश्य है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति एक गैर मुनाफा वाला संगठन है। श्रेष्ठ साहित्य को जन–जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य मकसद है।

स्नेहलता शुक्ला – इंदौर स्कूल ऑफ सोशल वर्क से समाज कार्य में मास्टर उपाधि। जेंडर और शिक्षा संबंधी किताबें तैयार करने में रुचि। सामाजिक आंदोलनों से जुड़ाव। दिल्ली में रहती हैं।

कनिका नायर – पर्ल अकादमी ऑफ फैशन, नई दिल्ली से कम्युनिकेशन डिजाईन की स्नातक उपधि। बच्चों की पुस्तकों के लिए रचनात्मक चित्रांकन और लेखन में गहरी रुचि। जयपुर में रहती हैं।

हम अक्सर सुनते हैं – ये लड़कियों का काम नहीं है। क्या ऐसा कहना सही है ? काम, खेल, आदतें, व्यवहार आदि क्या लड़कियों–लड़कों के लिए अलग–अलग हो सकते हैं? लड़की कमजोर है। क्या यह धारणा सही है? मन में ठान लिया जाए, तो कुछ भी असंभव नहीं। रजिया ने इन सवालों के जवाब कैसे खोजे? जानिए इसी पुस्तक से।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति